जंगली गणतन्त्र

सिंहासन से सिंह हटाकर बंदर गया बिठाया।
जंगल में गणतन्त्र आ गया सबने खुशी मनाया।।
आतिशबाजी और मिठाई ढोल ढमाके बाजे।
जंगल की उस भीड़-भाड़ में बंदर मामा नाचे।।
हिरन भेड़ खरगोश गाय भैंसों ने ली अँगड़ाई।
खत्म हुआ आतंक सिंह का आज शुभ घड़ी आई।।
भारी बहुमत से चुन करके नया कैबिनेट आया।
पशुओं की बहुसंख्य भीड़ ने जब सरकार बनाया।।
वह प्रधानमन्त्री बन बैठा लाल पिछाड़ी वाला।
बन बैठा लंगूर राष्ट्रपति है जिसका मुँह काला।।
हुए सुशोभित जब संसद में ये बन्दर सरकारी।
धन्नासेठ कुबेर कोबरे बन गये स्वयं मदारी।।
धन्नासेठ नचाये जैसा वैसा बन्दर नाचे।
साँप कोबरा जब फुफकारे बन्दर भरे कुलाँचे।।
किन्तु एक दिन किसी सिंह ने अपना रूप दिखाया।
भेड़ों के चर रहे झुण्ड से बच्चा एक उठाया।।
किसी भेड़ का बच्चा लेकर वह फुर्ती से भागा।
भेड़ों में विवेक सरकारी देखो झटपट जागा।।
भेड़ दौड़कर बन्दर के ढिग पहुँची शोर मचाई।
मेरा बच्चा शेर ले गया जल्दी करो सहाई।।
बन्दर बोला बहन अभी ऐक्शन तुरन्त मैं लूँगा।
अपराधी पर केस चलेगा कड़ी सजा मैं दूँगा।।

बन्दर राजा उठे छोड़कर अपना राजगलीचा।
दोनों ने मिल करके झटपट किया शेर का पीछा।।
शेर एक झुरमुट में छिपकर लगा शिकार चबाने।
बन्दर राजा चढ़े पेड़ पर अपने दाँत दिखाने।।
इस डाली से उस डाली पर लगे छलाँग लगाने।
शेर खा गया उस बच्चे को भेड़ लगी मिमियाने।।
रोना-धोना देख भेड़ का बन्दर नीचे आया।
बड़े खेद से उसने अपना कपटी मुँह लटकाया।।
बन्दर बोला देखो बहना मुझे खेद है भारी।
साथ तुम्हारे है इस दुःख में यह कुनबा सरकारी।।
मारा गया तुम्हारा बच्चा बात नहीं यह थोड़ी।
देखो मैंने भाग-दौड़ में कसर न कोई छोड़ी।।
इस शाखा से उस शाखा तक भागमभाग मचाई।
बचा नहीं पाया बच्चे को बात बड़ी दुःखदाई।।
तुमको जो नुकसान हुआ है कल दफ्तर में आना।
दिलवाऊँगा राजकोष से मैं तुमको हरजाना।।
जब तक सिंह सियार भेड़िए बन्दर राज करेंगे।
तब तक भेड़-बकरियों के बच्चे बेमौत मरेंगे।।
भेड़तन्त्र गणतन्त्र हो गया जंगलराज तमाशा।
मानव के समाज में देखो छाई घोर निराशा।।
'जिसकी लाठी भैंस उसी की' है चरितार्थ कहावत।
हाथी मद में मस्त हो गया पागल हुआ महावत।।
नहीं योग्यता क्षमता गुणवत्ता की बात सुहाती।
दुश्चरित्र दुर्गुणी राज में जनता मारी जाती।।
शिक्षा रोजी सुखसुविधा संरक्षण नहीं किसी को।
चारों जनाधिकार लुट गए संकट है धरती को।।
राजकोष पर चढ़ बैठे है चोर-उचक्के भारी।
प्राणों का भी मोल आँकती अजब नीति सरकारी।।

❀❀❀